व्यावहारिक रूप से इसका क्या मतलब है?

शायद आप यह पूछ रहे होंगे कि आप पशुओं के शोषण को कैसे समाप्त कर सकते हैं.

आप भी कुछ कर सकते हैं!

आप शाकाहार अपना सकते हैं. अभी. शाकाहार का अर्थ यह है कि आप पशुओं को खाएगें नहीं और किसी भी पशु उत्पादों का उपभोग नहीं करेंगे.

शाकाहार केवल आहार की बात नहीं; यह व्यक्तिगत स्तर पर एक नैतिक और राजनैतिक उन्मूलन के प्रति वचनबद्धता है जिसका विस्तार केवल आहार तक सीमित नहीं परन्तु कपड़ों तथा अन्य उत्पादों और व्यक्तिगत कार्यों और विकल्पों में भी है.

पशुओं कि मदद करने के लिए शाकाहार एक ऐसी विचारधारा है जिसे हम आज ही अपना सकते हैं - अभी. इसके लिए किसी महंगे अभियान कि आवश्यकता नहीं या किसी बड़े संगठन की भागीदारी या कोई कानून. ज़रुरत है तो सिर्फ इस मान्यता की कि अगर "पशु अधिकार" का कुछ अर्थ है तो वेः यह है कि हम पशुओं की हत्या और उन्हें खाने को नयाय्य नहीं ठेराह सकते.

मांग को घटा कर शाकाहार पशुओं की पीड़ा और मौत को कम करता है. यह अमनुष्यों की वस्तु स्थिति को अस्विकर्ता है और उनके निहित मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है.

शाकाहार अहिंसा के प्रति एक प्रतिबद्धता है. पशु अधिकार आंदोलन एक शांति प्रिय आंदोलन होना चाहिए जो हर प्राणी के खिलाफ हिंसा को अस्वीकार करे - चाहे मनुष्य या अमनुष्य.

शाकाहार पशुओं के प्रति सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक सक्रियता है और जब आप शाकाहार को अपना लें तो अपने परिवार, दोस्तों और समुदाय में लोगों को शाकाहार अपनाने के लिए शिक्षित करें.

यदि हम पशु शोषण को जड़ से ख़तम करना चाहते हैं तो शाकाहार एक आवश्यक आधार है. और यह आंदोलन व्यक्तिगत निर्णय के साथ शुरू होता है.

लेकिन मांस के एलावा अन्य पशु उत्पादों को खाने में गलत क्या है?

मांस खाने और □यरी या अन्य पशु उत्पादों के प्रयोग के बीच कोई सार्थक अंतर नहीं है. दूध, अं□, या अन्य उत्पादों के लिए शोषित पशुओं के साथ अगर बदतर नहीं तो कम से कम वैसा ही व्यवहार होता है जैसा उन पशुओं के साथ जिनका हम मांस खाते हैं, और वेः एक ही कसाईखाना में भेजे जाते हैं जिसके बाद लोग वैसे भी उनका मांस खा जाते हैं.

इस मान्यता को बनाए रखना कि मांस खाने में और दूध, अं□, या अन्य उत्पादों के बीच अंतर है मूर्खता यह कि एक और एक को खाने के बीच नैतिक अंतर है.

जितनी पीड़ा मांस के पीछे है उतनी ही पीड़ा एक गिलास दूध, आइसक्रीम कोन या एक अं□ के पीछे है

पशु को खाने में नैतिक उतनी ही है जितना कहने में बड़ी गाय छोटी गाय

जब तक ९९% लोग ऐसा सोचेगें कि पशु उत्पादों की खपत स्वीकार्य है तब तक पशुओं के लिए कभी कुछ नहीं बदलेगा.

तो...

निर्णय आपका है. कोई भी आपके लिए नहीं ले सकता. लेकिन अगर आप मानते हैं कि एक अमनुष्य के जीवन का नैतिक मूल्य है, तो जानवरों की हत्या में भाग लेना बंद कर दें चाहे वेः कितनी भी करुणा से करी जाए.

विरोधी आंदोलन में शामिल हों. शाकाहार अपनाएं. आज शाकाहार को अपनाना आसन है. और यह एक सही कदम है. अधिक जानकारी के लिए, विरोधी दृष्टिकोण की वेब साईट देखें.

www.AbolitionistApproach.com

© २००८ गैरी एल. फ्रंचोनी और ऐना ई. चार्लटन

जरूरी नहीं की अन्य व्यक्तियों या संगठनों द्वारा वितरण लेखकों की स्वीकृति का संकेत हैं. लेखक केवल इस विवरणिका के विचारों के जिम्मेदार हैं, वितरित कर रहे व्यक्तियों या संगठनों के विचारों के नहीं.

पशु अधिकार

विरोधी दृष्टिकोण

WWW.ABOLITIONISTAPPROACH.COM

पशु: हमारी नैतिक जिम्मेदारी

हमारा आप से अनुरोध है कि आप पशुओं के अधिकारों को गंभीरता से लें

ये बात हम सब मानते हैं कि पशुओं की अनावश्यक हत्या और उनको पीड़ा पहुँचाना नैतिक रूप से गलत है. लेकिन इसका क्या मतलब है?

पशुओं पर केवल इस लिए अत्याचार ढाना, या उनकी हत्या करना, क्योंकि इस से हमें मनोरंजन प्राप्त होता है, या ऐसा करना सुविधाजनक है, या यह महज एक आदत है - गलत है.

अधिकतर हम पशुओं का प्रयोग महज़ इस लिए करतें हैं क्योंकि इसमें हमें मज़ा आता है, क्योंकि यह सुविधाजनक है और क्योंकि ये हमारी आदत बन गई है.

अधिकतर पशुओं की हत्या आहार के लिए करी जाती है. संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (एफ. ए. ओ.) के अनुसार, मानव लगभग ५३ अरब पशुओं, यानि ५३०००००००० की

१४५०	लाख पशुओं की हर रोज़ हत्या
६०	लाख पशुओं की हर घंटे हत्या
१०,०००	पशुओं की हर मिनट हत्या
१,६८०	पशुओं की हर सेक□ हत्या

प्रति वर्ष भोजन के लिए हत्या कर देता है| इन आंक□ों में मछलियों और अन्य समुद्री पशुओं को नहीं गिना गया है.

इन संख्याओं में और वृद्धि हो रही है और इस सदी के दूसरे भाग में ये दोगुनी हो जायगी.

हम इस पशुबध का औचित्य कैसे सिद्ध कर सकते हैं?

हम यह नहीं कह सकते की हम पशु उत्पाद का प्रयोग स्वास्थ्य के लिए करते हैं. हमें स्पष्ट रूप से ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है. वास्तव में, सबूतों के आधार से पता चलता है कि पशु उत्पाद मानव के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है. अगर हम किसी चीज़ को लंबे समय से करते आ रहे हैं तो वेः नैतिक रूप से सही नहीं बन जाती. मनुष्य सदियों से हत्या और बलात्कार करता आ रहा है. आज हम ये स्वीकार करतें हैं की ऐसा करना नैतिक रूप से सही नहीं है.

हम पशुबध को इस आधार पर सही नहीं ठेहरा सकते की यह वैश्विक पारिस्थितिकी के लिए अनिवार्य है. आम सहमति बढ़ रही है कि पशु कृषि एक पर्यावरणीय आपदा है.

- ★ एफ. ए. ओ. के मुताबिक, पशु कृषि दुनिया की सभी कारों, ट्रकों और दूसरी गैसोलीन से चलने वाले वाहनों से भी अधिक ग्रीन हाउस गैस उत्पन्न करता है.
- ★ पशुधन पृथ्वी की सारी धरती का ३०% प्रयोग करता है, जिसमे से ३३% वैश्विक कृषि योग्य भूमि है.
- ★ पशु कृषि के कारण वनों को काटा जा रहा है. इन ज़मीनों का इस्तमाल पशुओं की चराई के लिए किया जाता है. चराई, संघनन और कटाव के कारण भूमि की अधोगति हो रही है.
- ★ पशु कृषि विश्व की तेजी से घट रहे जल संसाधनों के लिए एक बड़ा खतरा है. पशुओं के चारे के उत्पादन के लिए बड़ी मात्रा में जल की आवश्यकता पड़ती है.
- ★ पशु जितना प्रोटीन खाते हैं उतना देते नहीं. एक किलो पशु प्रोटीन बनाने के लिए पशुओं को औसत ६ किलोग्राम अनाज और चारा खिलाना पड़ता है.
- ★ एक किलो गो मॉस बनाने के लिए एक लाख लीटर से भी अधिक जल लगता है और एक किलो गेहूं उगाने में मात्र ९०० लीटर जल लगता है.

क्योंकि पशु जितना प्रोटीन चारे के रूप में खाते हैं उतना प्रोटीन मांस के रूप में देते नहीं, अनाज जो मनुष्य खा सकते हैं वो पशुओं को खिला दिया जाता है. इस प्रकार, अन्य कारकों के साथ, पशु कृषि कई मनुष्यों को भुखमरी के घाट उतार देता है.

हर साल ५३ अरब पशुओं पर अनावश्यक अत्याचार और मौत ढाने का हमारे पास केवल एक ही जवाब है - क्योंकि इसमें हमें मज़ा आता है, क्योंकि यह सुविधाजनक है और क्योंकि ये महज़ एक आदत बन गई है.

दूसरे शब्दों में कहा जाए तो हमारे पास इसका कोई तार्किक जवाब नहीं है.

पशुओं को लेकर हमारी सोच बहुत उलझन में है. हम में से कई लोग पालतू पशुओं, जैसे कुत्ते, बिल्लियाँ, खरगोश आदि के साथ रहते थे या रहते हैं. हम इन पशुओं से प्यार करते हैं. वेः हमारे परिवार के महत्वपूर्ण सदस्य हैं. उनकी मृत्यु पर हम शोक मानते हैं.

लेकिन हम दूसरे पशुओं पर चम्मच और कांटे घोसे हैं जो हमारे पालतू पशुओं से कतई अलग नहीं. यह तर्कविरुद्ध है.

पशुओं के प्रति हमारा व्यवहार

न सिर्फ हम पहुओं का प्रयोग कई ऐसे कामों में करते हैं जिन्हें आवश्यक करार नहीं दिया जा सकता, हम उनके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जो अगर मनुष्य के साथ किया जाए तो अत्याचार कहलाए.

पशु कल्याण कानून के अनुसार हमें पहुओं के साथ करुणा का व्यवहार करना चाहिए, परन्तु ये कानून व्यर्थ हैं क्योंकि पशु संपत्ति हैं; वेः आर्थिक वस्तु हैं जिनका हमारी लगाई गई क़ीमत के एलावा अन्य कोई मुल्ये नहीं. जहां तक कानून का सवाल है, अमनुष्य जानवर हमारी किसी और निजी संपत्ति, जैसे गाड़ी, फर्नीचर इत्यादि से अलग नहीं.

क्योंकि पशु हमारी संपत्ति हैं हम आम तौर पर लोगों को पशुओं के साथ कुछ भी करने देते हैं चाहे इसमें पशुओं को भयानक कष्ट भी क्यों न हो.

बेहतर कानून और उद्योग मानक क्यों नहीं?

अम्रीका और यूरोप की ज्यादातर पशु संरक्षण संगठन ऐसा मानते हैं की पशु शोषण की समस्या का समाधान पशु कल्याण कानूनों में सुधार और पशु उद्योग पर बेहतर स्तर बनाने का दबाव है.

यह संघठन अपने अभियानों के द्वारा चाहते हैं कि पशुओं को करुणा के साथ मारा जाए, उनको बड़े पिंजरों में कैद किया जाए इत्यादि. इन कुछ संगठनों का विश्वास है कि व्यवहार में सुधार से एक दिन पशुओं का प्रयोग या तो ख़तम हो जाएगा या काफी कम हो जाएगा.

लेकिन क्या यह इसका हल है?

आर्थिक वास्तविकता यह है कि व्यवहार में सुधार से बहुत कम या कुछ नहीं होता. एक "पिंजरे मुक्त" अंडे के पीछे उतना ही कष्ट समाया होता है जितना एक पारंपरिक अंडे में.

अगर पशुओं के शोषण को करुणा का चोला पहना दिया जाए तो जनता इसे शांतिप्रद रूप से देखेगी और पशु उत्पाद की खपत करती रहेगी जिस से पशुओं की औसत पीड़ा और मौत में व्रद्धी होगी.

इसके अलावा, इसका कोई प्रमाण नहीं की पशु कल्याण सुधारों से पशुओं का उपयोग बंद या काफी कम हो जायेगा. २०० वर्षों में हमने कई पशु कल्याण मानक और कानून बनाए परन्तु हम आज जितने पशुओं का भयानक तरीकों से शोषण करते हैं उतना हमने इतिहास में कभी नहीं किया.

और, सबसे महत्वपूर्ण बात यह है की शोषण सुधार इस बुनियादी सवाल को नज़रंदाज़ करता है कि हम पशुओं को संसाधन के रूप में कैसे प्रयोग कर सकतें हैं चाहे यह कितनी भी करुणा से किया जाए?

इसका समाधान क्या है?

इसका समाधान पशुओं के शोषण को पूर्ण रूप से समाप्त कर देना है, उसे विनियमित करना नहीं. इसका समाधान यह है कि हम इस बात को स्वीकार करें कि जिस प्रकार हर इंसान अपनी खास विशेषताओं के बावजूद यह अधिकार रखता है कि उसे किसी दूसरे की संपत्ति नहीं माना जाए, उसी प्रकार हमें यह समझना चाहिए कि हर संवेदनशील (अवधारणात्मक) प्राणी भी इस हक़ का दावेदार है.